अमेरिकी वेबसाइट पर लोकल किराया

अमेरिकी कंपनी ने एनसीआर समेत 18 शहरों के लिए फेयर पोर्टल लांच किया.

पंकज पाराशर

ग्रेटर नोएडा

ऑटो और टैक्सी वालों की मनमाना किराया वसूलने की आदत पर सरकार और प्रशासन तो अंकुश नहीं लगा पा रहा है लेकिन एक अमेरिकी कंपनी ने आम आदमी को इस ठगमारी से लड़ने का हथियार मुहैया करा दिया है। दिल्ली समेत एनसीआर में कहीं भी जाने से पहले कंपनी के वेब पोर्टल पर किराए की पूरी जानकारी हासिल की जा सकती है। आप अपने गंतव्य का रूट मैप जान सकते हैं। कोई बाधा आने पर वैकल्पिक मार्गों का पता लगा सकते हैं। पोर्टल एनसीआर समेत देश के 18 प्रमुख शहरों के लिए काम कर रहा है।

एनसीआर में सड़कों पर किराए को लेकर ऑटो-टैक्सी चालकों और सवारियों के बीच तू-तू, मैं-मैं आम बात है। किराया दरें तय होने के बावजूद चालक मनमाना किराया वसूलने से बाज नहीं आते। इससे कई बार चालकों एवं सवारियों में मारपीट की नौबत आ जाती है। लगातार शिकायतें मिलने के बावजूद सरकार और स्थानीय प्रशासन इस समस्या का समाधान नहीं कर पाए। लेकिन, अमेरिकी कंपनी सॉफ्ट यूएस विस्टा इंक एनसीआर के लोगों की समस्या हल करने को आगे आयी है।

अमेरिकी कंपनी ने सही किराए की जानकारी देने के लिए वेब पोर्टल शुरू किया है। इस पोर्टल के होम पेज पर मौजूद फेयर कैलकुलेटर में दोनों यात्रा स्थान दर्ज कर किराए का पता लगाया जा सकता है। कैलकुलेटर ऑटो, सामान्य कैब, एसी कैब और सभी श्रेणी की टैक्सी का किराया अलग-अलग बताता है। साथ ही गूगल मैप के जरिए रूट मैप भी मिल जाएगा। यात्रा की दूरी भी पोर्टल पर नजर आएगी।

कंपनी के मुख्य कार्यपालक अधिकारी स्वप्निल शाह का कहना है कि जब कोई नए शहर में जाता है तो, ऑटो-टैक्सी चालक उसके अंजान होने का फायदा उठाते हुए मनमाना किराया वसूलने का प्रयास करते हैं। शाह के मुताबिक, पोर्टल के कैलकुलेटर का सॉफ्टवेयर डिजाइन करने के लिए लोकल ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी और सरकारी किराया दरों को आधार बनाया गया है।

लोग उठा रहे फायदा

महज चार महीने में पोर्टल ने 2.79 लाख लोगों की मदद की है। इनमें मुंबई के बाद एनसीआर में सर्वाधिक 51,000 लोगों ने इस पोर्टल से किराए की जानकारी हासिल की है। प्रत्येक 18 सेकेंड में इन शहरों के लोगों ने पोर्टल से सहायता ली है।

पोर्टल का एड्रेस www.taxiautofare.com

इन शहरों में मिली सुविधा

दिल्ली और एनसीआर के अलावा मुंबई, नवी मुंबई, बेंगलूरू, कोलकाता, पुणे, अहमदाबाद, अमृतसर, चंडीगढ़, लुधियाना, औरंगाबाद, जयपुर, कोयंबटूर, पटना, त्रिवेंद्रम, मंगलौर, नागपुर में यह पोर्टल काम कर रहा है। वहीं, नए शहर में मनचाही जगह जाने के लिए अपना रूट बदलने या पुनर्निर्धारित करने की सुविधा भी पोर्टल पर है।

जानकारी

- मनमानी किराया वसूलने की प्रवृत्ति पर लगेगी रोक
- बाधा आने पर पता कर सकते हैं वैकल्पिक मार्ग

29 कंपनियों को फंसाया जाल में

पुलिस ने 10 कंपनियों और 5 संस्थागत निवेशकों के नाम किए उजागर, बाकी 14 कंपनियों के नाम का बाद में होगा खुलासा.

हमारे संवाददाता

गुड़गांव

सिटी बैंक घोटाले में शिवराज पुरी ने 29 कंपनियों को बैंक की फर्जी स्कीम बताकर अपने जाल में फंसा करीब 316 करोड़ रुपये ऐंठे हैं। पहले पुलिस को भी यह स्पष्ट नहीं था कि आखिर कितनी कंपनियों ने पूरे प्रकरण में पैसा निवेश किया है। शनिवार को आधिकारिक तौर पर राज से पर्दा उठ गया। शनिवार को पुलिस की ओर से जारी विज्ञप्ति के मुताबिक अभी तक 10 कंपनियों एवं 5 विदेशी संस्थागत निवेशको के नाम सामने आए हैं। इनमें संजीव अग्रवाल ने शिवराज पुरी सहित सिटी बैंक के 11 अधिकारियों के खिलाफ मामला भी दर्ज करवाया था। ओकेएस पैनटेक ने भी सिटी बैंक को नोटिस भेज सात दिनों के अंदर अपने पैसों की मांग की है।

जांच-पड़ताल

इन कंपनियों ने किया निवेश

- हीरो एक्सपोर्ट – 97 करोड़
- हीरो कॉरपोरेट सर्विसेज – 13.75
- ओकेएस पैनटेक – 2 करोड़
- सत्यम ऑटो – 25 करोड़
- मुंजाल इन्फ्रोटेक – 24 करोड़
- मुंबरेज – 71 करोड़
- करोपट पैड – 8 करोड़
- अरो इन्फ्राटैक – 25 करोड़
- मुंजाल इन्फोटेक – 2.5 करोड़
- स्पैड के – 62 करोड़

विदेशी संस्थागत निवेशक

- संजीव अग्रवाल – 32.43
- रेखा मुंजाल – 5 करोड़
- सुनील कसंद – 3 करोड़
- अनुपम भसीन – 30 लाख
- सुरेश तलवार – 70 लाख

सीए फर्म भी जुटी

पुलिस की ओर से लगाई गई सीए फर्म ने भी अपनी जांच शुरू कर दी है। पुलिस अब तक 81 खाते सीज कर चुकी है। इन्हीं खातों में करोड़ों रुपये की ट्रांजेक्शन हुई है। पुलिस ने सभी खातों का अधिकतर रिकॉर्ड अपने कब्जे में ले लिया है। इसके अलावा अर्थिक अपराध शाखा के अधिकारी भी खातों की जांच कर रहे हैं। पुलिस की अभी तक की जांच व अन्य टीमों द्वारा की गई जांच को क्रॉस चैक किया जाएगा।

गुप्ता ने लौटा दी रकम!

सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार पुरी ने जून 2010 से संजय गुप्ता से संपर्क साध सिटी बैंक की स्कीम के बारे में बताया था। गुप्ता ने अपनी कंपनी के अधिकारियों को इस बारे में बताया। लेकिन जब घोटाला सामने आया तभी संजय गुप्ता को इस फ्रॉड का आभास हुआ। इसी दौरान पुलिस ने पूछताछ के लिए गुप्ता को हिरासत में ले लिया। गुप्ता को कमीशन के तौर पर मिले 20 करोड़ रुपये उसने वापस कर दिए हैं।

कौन है रवि खन्ना ?

हीरो ग्रुप एसोसिएट के पूर्व चीफ फाइनेंशियल ऑफिसर संजय गुप्ता के बाद उनके दोस्त रवि खन्ना का भी नाम सामने आ रहा है। बताया जाता है कि गुप्ता की खन्ना के साथ गहरी मित्रता थी। हालांकि, सिटी बैंक के वकील हरीश मल्होत्रा ने बताया कि गुप्ता ने कमीशन में मिले पैसों से कुछ प्रॉपर्टी खरीदी है। गुप्ता ने 3.20 करोड़ रुपये अपने दोस्त व सीए रवि खन्ना के खाते में जमा करवाए थे। पुलिस ने रवि खन्ना के बारे में बताने से इंकार कर दिया।

खाली प्लाट पर 43 कंपनियां

कंपनी खोलने के नाम पर बैंक खातों में फर्जी दस्तावेज से संचालित किया जा रहा था.

वरिष्ठ संवाददाता

गाजियाबाद

हांगकांग में 350 करोड़ रुपये भेजने के मामले में आयकर विभाग की जांच में ऐसी कई फर्मों का खुलासा हुआ जो सिर्फ कागजों में ही चल रही थीं। यानी इन फर्मों के नाम पर खोले गए बैंक खातों में फर्जी दस्तावेज लगाकर खाते संचालित किए जा रहे थे। इन फर्मों का रजिस्ट्रेशन में दिए गए पते पर कोई अस्तित्व नहीं पाया गया है। गंगापुरम और महिंद्रा एंक्लेव के पते पर आयकर विभाग को 43 फर्मों के नाम पर बैंक खाते खुले मिले। जबकि मौके पर फर्म के स्थान पर खाली प्लॉट पाया गया।

आयकर विभाग सारा फर्जीवाड़ा बैंक शाखाओं से रुपये ट्रांसफर होने के मामले में मान रहा है। विभागीय अफसरों का कहना है कि बिना बैंक कर्मचारियों की संलिप्तता के इतना बड़ा फर्जीवाड़ा संभव नहीं है।

बैंक में खुले विभिन्न फर्मों के खाते कंप्यूटर पाट्र्स आयात कराने के नाम पर चल रहे थे। इन खातों में समय-समय पर रुपये डाले जाते थे, उसके बाद तीन खातों में रुपये ट्रांसफर किए जाते थे। दक्ष इंपेक्स, एप्पल कंप्यूटर्स तथा सनटेक कंप्यूटर्स से ही अधिकांश रुपया विदेश भेजा गया है। गोविंदपुरम के पास गंगापुरम में शिक्षा मार्केट के पते पर 18 कंपनियों के बैंक में खाते खुले हुए हैं। जबकि भवन स्वामी ने ऐसी किसी भी फर्म का कार्यालय होने से इंकार किया है। यही स्थिति महिंद्रा एंक्लेव में फ्री होल्ड मार्केट के पास खाली पड़े प्लॉट के साथ भी हुई है। इस पते पर 25 फर्मों के बैंक खाते खुले हुए थे।

नियमों का पालन नहीं: बैंकिंग क्षेत्र से जुड़े जानकारों का मानना है कि यदि कोई भी बैंक आरबीआई के केवाईसी (नो योर कस्टमर) नियमों का पालन करे तो किसी खाते में ज्यादा समय तक गड़बड़ी नहीं हो सकती है।

करोड़ों का मनी ट्रांसफर

गाजियाबाद से प्रतिमाह करोड़ों रुपये मनी ट्रांसफर के तौर पर विदेश भेजे जाते हैं। शहर में विदेश भेजने के लिए आरबीआई से अधिकृत एक ही कंपनी है स्वर्ण ओवरसीज। जिसके संचालक मनीष जैन हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न बैंकों की विदेशी विनिमय शाखाओं से विदेशों में रुपया भेजा जाता है। रुपया मंगाने के लिए वेस्टर्न यूनियन मनी ट्रांसफर जैसी कंपनियां चल रही हैं।

हमें फंसाया : मनीष जैन

आयकर की जांच से सुर्खियों में आए मनीष जैन का कहना है कि उन्हें इस मामले में फंसाया जा रहा है। मनीष का कहना है कि उन्होंने ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स की रजापुर शाखा में मात्र तीन खाते खुलवाए हुए हैं, ये तीनों लोन के खाते हैं। एक कार तथा दो दुकान के लिए लोन लिया था। तीन खातों में उन्होंने अपने एक मित्र के कहने पर इंट्रोड्यूसर की भूमिका निभाई है।

संजय गुप्ता ने 20 करोड़ कमीशन की बात स्वीकारी

गुड़गांव। सिटी बैंक घोटाले में फंसे हीरो ग्रुप एसोसिएट के पूर्व सीएफओ संजय गुप्ता को शनिवार को एक बजे अदालत में पेश किया गया।

चीफ ज्यूडीशियल मजिस्ट्रेट डीएन भारद्वाज की अदालत ने फैसला सुनाते हुए उसको सात दिन की रिमांड पर सौंप दिया है। इससे पहले 3 जनवरी को गुप्ता को पुलिस ने अदालत में पेश कर पांच दिन की रिमांड पर लिया था। पुलिस ने बताया कि संजय गुप्ता ने कमीशन में मिले 20 करोड़ रुपये से गुड़गांव में कुछ प्रॉपर्टी और एक कार खरीदी है। डीएलएफ फेज दो थाना प्रभारी बाबूलाल ने बताया कि गुप्ता ने 20 करोड़ कमीशन की बात स्वीकार कर ली है। अब उससे इस पैसे के निवेश की बाबत पूछताछ की जाएगी।